हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न पत्र–कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

1. निम्नलिखित गद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) तुम्हारा दूसरा अनुमान ही सही है। रोगी से पहले उसकी सेवा–सुश्रूषा करने वाला अपना सम्बन्धी ही उसकी बीमारी से ऊब जाता है। मनुष्य को अपाहिज बनाने वाली विभिन्न असाध्य बीमारियों से रोगी तो जूझता है– उसकी जिजीविषा नहीं मरती। सच पूछो तो दूसरों की शान्ति–चैन के लिए ही कभी–कभी उसमें खुदकुशी करने की भी इच्छा उत्पन्न होती हैं। उसके पास रहने, कभी–कभार मिलने–जुलने आते शुभचिन्तक, झपकियाँ लेती उसकी जिजीविषा को थपकियाँ देकर ऐसे सुला देते हैं, मानो सोया नहीं, मृत्यु को वरण किया हो। 10

अथवा

अनायास उनके अतीत का एक टुकड़ा उड़कर चला आया था, उनके सामने। प्रारम्भ

questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

से उनकी धारणा थी कि भारतीय नारियों में कोमलता, भोलापन, लचीलापन और साथ-साथ एक ठसक होती है और इन सबसे ऊपर होता है उनका स्त्रीत्व-जिसकी मिसाल नहीं। त्याग, तपस्या, सहिष्णुता, गुण ग्राहकता कोई उनसे सीखे। आज साक्षात् अपनी धारणा के अनुरूप शालिनी को देख अतीत में ही खो गये। 10

(ख) घर का घर तबाह हो जाए, आदमी की जिन्दगी तबाह हो जाए, पर यह जालिम तरस नहीं खाती! कैसा मूर्ख होता है आदमी भी, वह समझता है, वह इसे पी रहा है पर असल में यह आदमी को पीती है, आदमी की जान को, आदमी के खून को पीती है.. उसके ईमान को पीती है, हाँ-हाँ! 10

अथवा

जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो कुत्ते के प्रगति घृणा की गंध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले न लगाता। वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा में पहुँचा दिया। नही, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था। 10

(ग) दुःख है, वही मेरे पास है। उससे जो शब्द बन सकते हैं, उन्हीं तक मेरी पहुँच है। आगे शब्दों में मेरी गति नहीं है। जो भाव मन में हैं, उसके लिए संज्ञा मेरे जुटाये जुटती नहीं। पशु जो मैं हूँ। संज्ञा तुम्हारे समाज की स्वीकृति के लिए जरूरी होती होगी, लेकिन मैं तुम्हारे समाज की नही हूँ। मैं निरी गौ हूँ। तब मैं कह सकती हूँ कि तुम मेरे कोई हो, कोई न हो, दूध मेरा किसी ओर के प्रति नहीं बहेगा। इसमें मैं या तुम या कोई शायद कुछ भी नहीं कर सकेंगे। इस बात में मुझ पर मेरा भी वश कैसे चलेगा ? तुम जानते हो, मैं कितनी परवश हूँ। 10

2. उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर 'ज्यों मेहंदी को रंग' उपन्यास की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'ज्यों मेहंदी को रंग' उपन्यास की प्रमुख और जीवन नारी-पात्र शालिनी के व्यक्तित्व और चरित्र की विश्लेषण कीजिए। 15

3. 'पुरस्कार' कहानी के नामकरण की सार्थकता पर विचार करते हुए, कहानी की मूल संवेदना का प्रकाश डालिये। 15

अथवा

''मेरा घर कहाँ' शीर्षक कहानी निम्नवर्गीय अभावग्रस्त नारी के शोषण और यातनापरक जीवन की कथा है।'' इस कथन की समालोचना कीजिए। 15

4. कहानी के तत्त्वों के आधार पर मन्नू भंडारी की 'नशा' शीर्षक कहानी की सप्रमाण समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

''एक गौ' कहानी में गाय की मुखरित वाणी वर्तमान युग की यांत्रिक सभ्यता का निर्ममता, अर्थ प्रमुखता और कठोरता पर तीखा व्यंग्य है।'' इस कथन की सत्यता 'एक गौ' से उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिए। 15

5. हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए 'नयी कहानी'

questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner

की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 13

अथवा

उपन्यास की परिभाषा देते हुए, उपन्यास और कहानी के अन्तर को स्पष्ट कीजिए। 13

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(i) प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास (ii) जयशंकर प्रसाद की कहानी कला

(iii) हिन्दी कहानी की प्रमुख शैलियाँ (iv) हिन्दी के प्रमुख आंचलिक उपन्यासकार

(v) कथाकार मुंशी प्रेमचन्द। 6+6

questionpaperesult.com

Scanned by CamScanner